जब रासायनिक कचरे ने मचाई तबाही

संध्या रायचौधरी

अमरीका के न्यूयॉर्क शहर के नज़दीक नियाग्रा फॉल्स का इलाका कभी हरा-भरा हुआ करता था। आज से करीब सवा सौ साल पहले यहां दुनिया का सबसे विशाल महानगर बनाने की योजना बनी थी। साथ ही, पनबिजली बांध बनाने का भी प्लान था। लेकिन नियाग्रा नदी से जुड़ी लव कैनाल के बगल में मौजूद एक कि.मी. लंबे गड्ढे में जब रासायनिक कचरा भरा जाने लगा तो ऐसी आपदा आई कि पूरी योजना धरी की धरी रह गई और इस लव कैनाल हादसे को अमरीकी इतिहास में विशाल पर्यावरण हादसों में शामिल किया गया।

लव कैनाल की कहानी की शुरुआत 1890 में उस समय हुई जब विलियम टी. लव नामक व्यक्ति न्यूयॉर्क के पास स्थित नियाग्रा फॉल्स के इलाके से जुड़ी कई महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के साथ वहां आए। वहां की ज़मीन के मालिक और उन्होंने मिलकर वहां एक विशाल महानगर के निर्माण की कल्पना की और माना जा रहा था कि वहां करीब एक लाख से भी अधिक लोग आराम से रह सकेंगे। वहां की हज़ारों एकड़ ज़मीन पर एक अद्वितीय सुंदर पार्क बनेगा। साथ ही, ऊपरी और निचली नियाग्रा नदी के बीच स्थित ग्यारह किलोमीटर लंबी कैनाल पर एक पनबिजली बांध के निर्माण का निर्णय लिया गया।

दुर्भाग्यवश एक साल के भीतर ही लव का सारा प्लान फेल हो गया और वे भूल गए कि वह वहां दुनिया का अद्वितीय शहर बसाने आए थे। लव के इस महत्वाकांक्षी शहर का एक हिस्सा कैनाल के दायरे में आने वाले एक कि.मी. लंबे गहरे गड्ढे में बनाया जाना था। कुछ दशकों बाद इस गड्डे को नियाग्रा फॉल्स शहर की अथॉरिटी ने खरीद लिया और निर्णय लिया कि यह स्थान केमिकल डंपिंग साइट (रासायनिक कचरा भराव स्थल) के तौर पर उपयोगी व एकदम सही है।

गौरतलब है कि यह औद्योगिक शहर धीरे-धीरे विस्तार ले रहा था और उस गड्ढे में रासायनिक कचरा फेंका जा रहा था। यह काम करीब बीस साल तक चलता रहा और बाद में इसे हुकर केमिकल एंड प्लास्टिक कॉरपोरेशन नामक कंपनी ने अपने रासायनिक निस्तार के लिए खरीद लिया। 1953 तक कंपनी ने वहां करीब 22 हज़ार टन कचरा फेंका और गड्ढा पूरी तरह भर गया।

उस वक्त तक उस रासायनिक कचरे से होने वाले खतरे की जानकारी किसी को नहीं थी। बल्कि वहां रहने वाले लोग तो इस बात से खुश थे कि केमिकल फैक्ट्री उनके लिए वहां कई तरह की सुविधाएं मुहैया करा रही है। इस बात से हर कोई अनजान था कि वह कंपनी खतरनाक गतिविधियों में लिप्त है। लव कैनाल को कीचड़ और धूल से ढंक दिया गया था और हुकर केमिकल्स के विशेषज्ञों ने उसे सुरक्षित भी घोषित कर रखा था।

1940 के दशक में वहां जब भी कोई बाहरी वैज्ञानिक आता तो वह इस रासायनिक कचरे को खतरनाक घोषित कर देता। इन्हीं वैज्ञानिकों में एक थे डॉ. रॉबर्ट मोब्स। उन्होंने कीटनाशकों और कैंसर के बीच की कड़ी का पता लगाया था। उन्होंने बताया कि हुकर केमिकल्स के अधिकारियों को इस रासायनिक कचरे के खतरनाक जोखिमों की जानकारी नहीं है। इतना खतरनाक स्थान होने के बावजूद उस ज़मीन पर कहीं भी लाल झंडे नहीं गाड़े गए थे। गड्ढे का दुष्प्रभाव जल्द ही सामने आ गया। वहां रहने वाले लोगों को महसूस होने लगा कि पूरे इलाके में अलग तरह की गंध और पदार्थ हैं जिससे सांस लेने में दिक्कत हो रही है। इसके अलावा, धरती पर फॉस्फोरस के टुकड़े पाए गए। स्कूल में खेलने

के दौरान विषैले कचरे से बच्चों के बीमार होने की भी खबरें आई। घर के तहखाने में जाने पर लोगों का दम घुटता था।

स्थानीय अधिकारियों को इस मामले की जानकारी दी गई लेकिन कोई एहतियाती कदम नहीं उठाया गया। 1976 में वहां काफी बारिश हुई और भयंकर तूफान ने स्थितियां बदल कर रख दीं। गड्ढे में भरा सारा रासायनिक कचरा बाहर सतह पर फैल गया। यही कारण था कि बाद के वर्षों में गर्भपात की घटनाएं काफी सामने आई और वहां अविकसित बच्चे पैदा हुए। उस समय गर्भवती महिलाओं को कई तरह की बीमारियां घेर लेती थीं। लगभग 80 प्रतिशत महिलाओं का गर्भपात हो जाता था। जब ये घटनाएं बहुतायत में होने लगीं तो एक सर्वे वहां किया गया जिसमें पाया गया कि 1974-78 के बीच पैदा हुए 56 फीसदी बच्चे अविकसित हैं। शुरुआत में तो कोई भी यह मानने को तैयार नहीं था कि वहां के लोगों के बीमार होने का कारण वे रसायन हैं जबकि वहां के पानी में डाईऑक्सिन पाया गया था। 1979 में जब वहां के लोगों के खून की जांच की गई तो सफेद रक्त कणों की मात्रा में काफी इज़ाफा पाया गया, जो ल्यूकेमिया का लक्षण था।

1978 में स्टेट हेल्थ कमिश्नर डॉ. रॉबर्ट पी. व्हेलेन ने लव कैनाल के आसपास के इलाके को खतरनाक घोषित कर दिया। स्कूल को बंद कर दिया गया। वहां रहने वाले करीब दो सौ परिवारों को वहां से तुरंत हटाया गया। उसी साल अगस्त आते-आते इस स्थान की ओर पूरे देश के लोगों का ध्यान गया। इसके बाद अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने वहां के लोगों की सहायता के लिए फेडरल डिज़ास्टर असिस्टेंस एजेंसी को ज़िम्मेदारी सौंपी। लेकिन समिति ने अपनी ज़िम्मेदारी अच्छी तरह नहीं निभाई और कागज़ों पर खानापूर्ति कर दी। इसके बाद एक एनजीओ को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई और उसने अपना काम पूरी ईमानदारी से किया। लेकिन स्थिति को संभलने में सालों लग गए। बाद के कई वर्षों तक बच्चों, बुज़ुर्गों और गर्भवती महिलाओं को इन समस्याओं का सामना करना पड़ा था।
(स्रोत फीचर्स)